उपसंहार

हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानियों में पिछले दशकों में अधिक बदलाव आया है। उपन्यास एवं कविता की अपेक्षा कहानियों में प्रयोग अधिक किये जा रहे हैं। कहानी आधुनिक संसार की जटीलता, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से सीधी जुडी हुई हैं। वैसे देखा जाए तो नई कहानी का मुख्य स्वर केवल `यथार्थ` को अभिव्यक्ति देना ही नहीं है, अपितु नये सिरे से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र के आपसी सम्बन्धों को जाँचना भी है। नई कहानी के तीन प्रमुख कहानीकारों में से राजेन्द्र यादव एक हैं।

राजेन्द्र यादव एक प्रगतिशील लेखक हैं, उन्होंने सामाजिक समस्याओं एवं प्रश्नों को व्यापक रूप में उठाने का प्रयास किया है। उन्होंने वर्तमान समाज एवं परिवार के बदलते - टूटते, बनते-बिगडते सम्बन्धों के अनेक पहलुओंपर विचार किया हैं। नई कहानी की विकास यात्रा में यादव जी की कहानियाँ अपना अलग स्थान रखती है। आधुनिक कहानी स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर जा चुकी है। परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण समाज का चित्रण करने की अपेक्षा समाज की ईकाइ व्यक्ति को जाँचने का प्रयत्न अधिक तर किया जाता है। यादव जी ने आजादी मिलने के दो-चार साल पहले से ही कहानी लिखना शुरु किया था। उनकी प्रथम प्रकाशित कहानी` प्रतिहिंसा` है। यादव जी ने बचपन से ही कहानियों को लिखने का प्रयत्न किया है। अन्य कहानीकारों की तरह उन्होंने अपनी कहानी यात्रा बडी सुझ-बुझ के साथ जारी रखी है। इसलिए इतने अर्से के बाद उनकी कूल नब्बे के आस-पास कहानियाँ मिलती है।

यादव जी ने प्राय: बदलते हुए जीवन मूल्य तथा बदलते हुए परिवेश को बडी तत्परता के साथ चित्रित किया है। उन्होंने कहानियों के द्वारा सामाजिक

प्रश्नों और समस्याओं को किसी एकही दृष्टि से न उठाकर उनकी समग्रता एवं व्यापकता में उठाया है। लेखक राजेन्द्र यादव जीवन के प्रति आस्थावान रहा है। उन्होंने व्यक्ति के मन की गहराइयों में उतरकर उसकी छटपटाहट एवं तडपन को अंकित किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार,कहानीकार,कवि,प्रकाशक,सम्पादक, अनुवादक तथा समीक्षक के रूप में राजेन्द्र यादव जी ने हिन्दी साहित्य में अपना अलग स्थान निर्माण किया। बचपन में उनकी दाहिने पैर को मारी चोट लगी और विकलांगता नसीब में आयी। इसके कारण उनकी शारीरिक गतिविधियाँ सीमित हो गयी। इस क्षति की पूर्ति उन्होंने लेखक बनकर की। अपने लेखन में यादव जी ने स्थान स्थान पर जीवनानुभव की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। कोई भी संवेदनशील पाठक उनके उपन्यास में अपनी तसवीर कही-न-कही अवश्य देख सकता है। अनुभव की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण स्वातन्त्र्योत्तर कालीन हिन्दी कथा साहित्य में उनका अलग स्थान है। यादव जी एक ऐसे कलावादी साहित्यकार है, जिनपर प्रगतिशीलता या सामाजिक यथार्थ का मुलाटा पाया जाता है। उनके पास सक्षम प्रतिभा है,यथार्थ को पहचानने की क्षमता है। इसीकारण अपने समकालीन कथाकारों में यादव जी बिल्कूल ही अलग से पहचाने जाते है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय में राजेन्द्र यादव की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। राजेन्द्र यादव नई कहानी के प्रमुख लेखक है। उन्होंने १९५० ई.के.आस-पास कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया था। लगभग नब्बे के आसपास होनेवाली उनकी कहानियाँ मुख्य सात कहानी संग्रहों में मिलती है। विषय की विविधता ,आधुनिक समाज की समस्याएँ उनकी कहानियों में दिखायी देती है। यादव जी अपने आपसे पूराने परिपाठी से अलग रहने में तथा परम्परा का नये सिरे से विकास करने में सदैव सफल रहे है। इनकी कहानियों का

विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि लेखक ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय मानव को उभारने का प्रयास किया है। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग एवं निम्न - मध्यवर्ग के विवशता एवं कुण्ठाओं के चित्र अधिक सजीवता के साथ अंकित है। यादव जी ने अपनी कहानियों में रोजाना व्यवहार में आनेवाली अकृत्रिम भाषा-शैली का प्रयोग किया है। आधुनिक कथा साहित्य में यादव जी की कहानी यात्रा सफल एवं समर्थ सिध्द हुई है।

तृतीय अध्याय में यादव जी की कहानियों में चित्रित समस्याओं को देखा है। राजेन्द्र यादव की कहानियों में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक ,आर्थिक समस्याएँ देखी है। सामाजिक समस्याएँ अलग - अलग आयामों में देखी गयी है - नारी समस्या,प्रेम समस्या,पारिवारिक समस्या, पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या,अकेलेपन की समस्या,दिखावटीपन की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या,आन्तर्जातीय विवाह की समस्या,टूटते सम्बन्ध की समस्या तथा वर्जित काम सम्बन्ध की समस्या। यादव जी की कहानियों में नारी समस्या` पहली कविता`,` त्याग और मुस्कान`,` जहाँ लक्ष्मी कैद है`,` तीन पत्र और आलपीन`,` अंगारों का खेल`,` खानदानी घर`, ` कृतिया`,` लकडहारा`, कहानियों में प्रखरता से चित्रित हुई है। मनुष्य के जीवन में प्रेम एक ऐसी भावना है, जिसके सहारे वह जिन्दगी काट सकता है।` प्रेम ` यह भाव व्यापक है। आधुनिक युग में इसे संकुचित कर दिया है और वह सिर्फ स्त्री-पुरुष समस्या एवं विवाहोत्तर प्रेम समस्या चित्रित है।` अंधा शिल्पी और आँखो - - वाली राजकुमारी`,` खुशबू`,` अनुपस्थित सम्बोध्दन`,` अभिमन्यु की आत्महत्या`, ` मेरा तन-मन तुम्हारा है,`` रिपीट ट्रेजेडी`,` एक कमजोर लडकी की कहानी`, ` निराजना`,` कहानियों में प्रेम समस्या मुखरित है। पारिवारिक समस्याएँ ` तलवार पैंचहजारी ` टूटना`,` आध्यम का विद्रोह`, आदि कहानियों में देखी गयी है। व्यक्ति अगर किसी का रिश्तेदार है तो उस रिश्ते की हमारे प्रति एक माँग रहती है, उन माँगों के फेरे में रहकर हम अपने-आप में उलझे रहते है। इसी कारण दोनों में विश्वास की कमी आने लगती है। संसार रूपी रथ को चलानेवाले दो पहिए होते

हैं, पति और पत्नी । इन दोनों में एक-दूसरे के प्रति विश्वास की कमी नजर आती है, तब उस रिश्ते में दरार पड़ती है । यादव जी की कहानी में पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या बड़ी सूक्ष्मता से अंकित की गयी है ।` टूटना`,` तनाव`,` भविष्य के आसपास मँडराता अतीत`,` मजाक`,` पूराने नाले पर नया प्लैट`,` किनारे - से - किनारे तक`,` छोटे - छोटे ताजमहल`,` अपने पार`,` खेल`,` पेट्रोल पम्प`, कहानियों में पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या अत्यन्त स्वाभाविकता के साथ चित्रित हुयी है ।

वर्तमान जीवन में मनुष्य निरंतर अकेलेपन का सामना करता है इस अकेलेपन के कारण जीवन में उत्पन्न हताशा निरर्थकता को यादव जी यथार्थ के साथ चित्रित करते है । उनकी कुछ कहानियों में अकेलेपन की समस्या देखी गयी है जैसी -- ` सम्बन्ध`,` एक कटी हुई कहानी`,` एक खुली हुई सौंझ` ,` दो बुर्के`, यादव जी ने अपनी लेखन का केन्द्र मध्यवर्ग बनाया है । मध्यवर्ग की अन्य समस्याओं के साथ-साथ दिखावटीपन की समस्या को कुछ कहानियों में देखा जा सकता है । जैसे --` मेहमान`,`सिलसिला`,` प्रश्नवाचक पेड़` । निम्नवर्ग की समस्या उनके ` शरन् और प्रेमचंद` एवं पिल्ला` कहानी में चित्रित है । यादव जी ने अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को भी दो-चार कहानियोंमें चित्रित किया है --` बिरादरी बाहर`,` नये नये आनेवाले` ,` पास-फेल` कहानी में यह समस्या स्वाभाविक ढंग से उभरी है । टूटते सम्बन्धों की समस्या` गार्जियन` और ` समझौता` में प्रखरता से` उभरी हुई लगती है । यादव जी कुछ कहानियों में मनोविश्लेषक की तरह नजर आते है , साक्षी है ` वर्जित काम सम्बन्ध की समस्या को लेकर चलनेवाली ` प्रतीक्षा` और` बारह वर्ष बारह घन्टे` कहानियाँ । राजेन्द्र यादव जी की कहानियों में राजनीतिक समस्या कम मिलती है`बेटी का बाप` और ` लंच टाईम ` कहानी में राजनीतिक समस्या का संदर्भ मिलता है । यादव जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से राजनीतिक समस्या को उठाने का प्रयास कम किया है ।

यादव जी की कहानियों में धार्मिक समस्याएँ अपने यथार्थ रूप में मुखरित हुई है। धर्म का आडम्बर,आस्थाहीनता,अन्धविश्वास, के कारण उत्पन्न धार्मिक समस्या `जय गंगे`,` किराये का काम`,` मैं तुम्हें मार दूँगा`,` भविष्य वक्ता` ` नास्तिक`,` कलाकार` कहानी में चित्रित करके लेखक ने अपनी सम्पन्न प्रतिभा का परिचय दिया है।

यादव जी की बहुत-सी कहानियों में आर्थिक समस्या दिखाई देती है। मनुष्य की आर्थिक विवशता,जिन्दगी का दोहरापन,अर्थ का अभाव, अर्थ से उत्पन्न घुटन, और छटपटाहट, अर्थ के कारण उत्पन्न जिन्दगी के रोजमर्रा के संघर्ष को यादव जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है` मय`,` खोखले खम्भे`, रोशनी कहाँ है`,` कुत्ते`,` स्वतंत्रता दिवस`,` शहर के बीच एक वृक्ष`,` दायरा`, ` साइकिल`,` बडी कृपा है`,` ढोल`,` चुनाव`,` देवताओं की मूर्तियाँ` कहानियों में आर्थिक समस्या को रेखांकित किया गया है।

राजेन्द्र यादव जी ने अपनी कहानियोंमें सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक, आर्थिक समस्या को बडी सूझ-बूझ के साथ उठाया है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता है। समाज में होनेवाले बदलाव को वह अंकित करता है। यादव जी श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी है जिन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा वास्तविकता के साथ समस्याओं को पकडने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत प्रबंध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे उनके निष्कर्ष निम्नानुसार है ---

१ राजेन्द्र यादव की कहानियों की विशेषताएँ --

यादव जी ने अपने कथानकों में व्यक्ति की आस्था,संकल्प, जीजीविषा और अन्त:प्रकृति के साथ-साथ उसके बाह्य संघर्ष का चित्रण बडी सफलतापूर्वक किया है। यादव जी ने अनुभव के प्रामाणिकता के बल पर समाज और व्यक्ति की समस्याओंको

देखना पसंद किया है। निम्न और उच्च वर्ग की तुलना में उन्होंने मध्यकी से ही सम्बन्धित कहानियाँ लिखी है। उनके कथासाहित्य में नये शिल्प का आग्रह मिलता है। नया शिल्प और नया प्रयोग मानव भूत की तरह हमेशा राजेन्द्र यादव जी पर सवार रहता है। जिस कारण रस भंग का दोष उनके कथा साहित्य में यथातथा दिखायि देता है। जैसे एक कमजोर लडकी की कहानी'। उन्होंने आधुनिक युग के बदलते, टूटते, बनते, बिखरते सम्बन्धों के अनेक पहलूओं की अपनी कहानियों का आधार भी बनाया है। जैसे -- गुजरते, साये, टूटा हुआ पुरूष, प्रणय और परिणय आदि। प्राय: उनकी सभी कहानियाँ एक विशेष मनस्थिति को लेकर ही चलती है। जैसे प्रतीक्षा, टूटना, आदि। यादव जी ने अपनी अनेक कहानियों में नारी रूढीबध्द को मुक्त करने के लिए उसके प्रति पूरी सहानुभूति रखते हुए स्वार्थी पुरूषवर्ग को फटकारा है। जैसे - ' जहाँ लक्ष्मी कैद है'। उन्होंने अपनी कहानियों के लिए छोटे-बडे, लघु-दीर्घ, संक्षिप्त विस्तृत सभी प्रकारके ऐसे शीर्षक चुने है जो नवीन, मौलिक एवं सांकेतिक है। लेखक ने मध्यवर्ग के ऐसे पात्रों का चरित्र-चित्रण अधिक किया है, जो घूटन व कुण्ठा में ही जीवन का सुख स्वीकारते हुए तथा वैयक्तिक समस्याओं में ही संलग्न दिखायी देते है। कुछ पात्र आत्मपीडावादी, कुछ अस्तित्ववादी, कुछ आस्थावादी, तो कुछ जीवन संघर्ष में रत रहकर भी उससे मुक्ति पाने के लिए सतत प्रयास करते हुए दिखायी देती है।

यादव जी ने अपनी कहानियों में देशकाल की अपेक्षा, परिस्थिति चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया है। वह मनोविज्ञान के परिवेश कल्पना से अत्यधिक प्रभावी रहा है। उसने परिवेश के द्वारा ही व्यक्ति की बाह्य, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति उसकी शिक्षा-दीक्षा, उसका रहन-सहन, उसके रीति-रिवाज अथवा उसके संस्कारों का निरूपण किया है। उन्होंने प्राय: जैसे अनुभव किया है उसे उसी रूप में अपनी सरल एवं स्वाभाविक भाषा में व्यक्त किया है।

२ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में राजेन्द्र यादव का स्थान --

आधुनिक कथा साहित्य वर्तमान काल की महान उपज है। आधुनिक काल में हिन्दी कहानी ने अपनी विकास यात्रा जारी रखी हैं। देश के स्वातन्त्र्योत्तर नये परिवेश में नये सन्दर्भों को लेकर यह भारतीय जनजीवन व्यक्ति का व्यक्ति के साथ, व्यक्ति का समाज के साथ आपसी सम्बन्ध नये सिरे से स्थापित करने लगा था। जिसका प्रतिबिम्ब कम-अधिक मात्रा में हिन्दी कथा साहित्य में दिखाई देने लगा। नयी कहानी की यात्रा कुछ हद तक प्रेमचंद जी की `कफन', पुस की रात', `नशा' जैसी कहानियों से प्रारम्भ मानी जाती है।. ग.मा.मुक्तिबोध,धर्मवीर भारती,मोहन राकेश,कमलेश्वर,राजेन्द्र यादव, नरेश मेहता,अमरकान्त,रामदरस मिश्र, मार्कण्डेय,फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, रवीन्द्र कालिया,उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी,सुधा अरोडा आदि आधुनिक कथा साहित्य के प्रतिथ यश लेखक हैं। जिन्होंने आधुनिक जीवन के यथार्थ को बडी खूबसूरतीसे पकडा है।

राजेन्द्र यादव जी अपने दशक के सिध्दहस्त कथाकार है। जिन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से पाठकों को चौकाने का कार्य किया। उनकी कहानियों में प्राय: आत्मनिष्ठता एवं व्यक्तिमूलक भावधारा की अभिव्यक्ति का ही प्राबल्य मिलता है। राजेन्द्र यादव के पास ऐसी प्रतिभा है,जो यथार्थ को पहचानने की शक्ति रखती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को नई दिशा, नई दृष्टि प्रधान करनेवाले शीर्षस्थ नये कहानीकारों में राजेन्द्र यादव का स्थान विशिष्ट है। उन्होंने साहित्य सृजन को स्वधर्म के रूप में अपना कर साहित्य के प्रति सदैव प्रतिबध्द रहने का प्रयास किया हैं। इसीकारण उन्हें आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य का विशेष कर नई कहानी का प्रमुख हस्ताक्षर माना जाता है। नई कहानी को गति-प्रगति और मार्ग दिखाकर स्थापित करने वालों में राजेन्द्र यादव का नाम अपरिहार्य हैं। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की नई कहानी के न केवल एक प्रणेता के रूप में अपितु उस साहित्य को समृध्द बनानेवाले प्रमुख कहानीकारों में भी राजेन्द्र जी

का नाम महत्वपूर्ण है । जिनका उल्लेख तथा कार्य मूल्यांकन किये बीना हिन्दी कहानी साहित्य का इतिहास परीपूर्ण नही बन सकता ।

३ राजेन्द्र यादव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ --

यादवजी की कहानियों में विविध समस्याएँ विद्यमान हैं । उन्होंने कहानियों में समस्याओं का अनुशीलन करते समय प्रमुखत: सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं के सन्दर्भ में ही किया है । उनकी कहानियों में सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत नारी की विविध समस्याओं का चित्रण प्रमुखता से मिलती है । उनकी कुछ कहानियों में प्रेम-समस्या, पारिवारिक समस्या अपने यथार्थ के साथ प्रकट हुई है । पति-पत्नी सम्बन्ध समस्यायें उनकी कहानियों की रीढ है । सम्बन्धहीनता के कारण दाम्पत्य जीवन में विविध कारणों से तनाव उत्पन्न होता है, उसे यादवजी ने सूक्ष्मता के साथ अंकित किया है । महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अकेलापन सॉप की तरह डसता है । लोगों की भीड-भाड में भी व्यक्ति अपने आप को अकेला महसूस करता है । इस अकेलेपन की समस्या को कुछ कहानियों में स्थान मिला है । मध्यवर्ग की दिखावटीपन की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, आन्तर्जातीय विवाह की समस्या, टूटते सम्बन्धों की समस्या, वर्जित काम-सम्बन्ध की समस्या - ये अन्य सामाजिक समस्याएँ यादव जी की कहानियों में चित्रित है । उनकी सिर्फ दो कहानियों में राजनीतिक समस्या उभरी है ।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में राजनीतिक सन्दर्भ कम है । एक-दो कहानियों में राजनीतिक सन्दर्भ मिलता है । किन्तु वह न के बराबर है । इसलिए इस निष्कर्ष पर पहुँचना गलत नही लगता कि यादव जी ने अपनी कहानियों के द्वारा राजनीतिक समस्या को नही छेडा , कारण उसके अन्य हो सकते है पर यादवजी ने सामाजिक, आर्थिक, समस्या को ही प्रमुखता दी है ।

उनकी कहानियों में धार्मिक समस्या कुछ हदतक मिलती है । अन्धविश्वास, धर्म का आडम्बर,भविष्य वक्तव्य आदि के रूपमें धार्मिक समस्या मिलती है । गरिबी, बेकारी,वर्ग व्यवस्था, अर्थ वितरण,अर्थ अभाव आदि के कारण उत्पन्न व्यक्ति तथा समाज की आर्थिक समस्या को यथार्थ के साथ कथाकारने स्पष्ट किया है ।

इन समस्याओं को देखने के बाद स्पष्ट रूप में यह कह सकते हैं कि राजेन्द्र मानव जीवन के विभिन्न धरातल नुसार, विभिन्न समस्याएँ चुनकर अपने साहित्य में सम्पूर्ण सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रूप में सफल रहे है । सार रूप में हम कह सकते हैं कि यादव जी की रचनाओं की विशिष्टता है उनके प्रामाणिक अनुभव । यादव जी ने ऐसे जीवन सत्य को अपने समाज और परिवेश से प्राप्त किया है । जो किसी न किसी कोण से मानवीय हीत - अहितसे जुडा हुआ है । यही अनुभूत सत्य उन्हें एक नवीन एवं स्वस्थ दृष्टिकोन से अर्जित करता है । यही कारण है कि उनकी रचनाओं में जीवन के यथावत विस्तार के साथ ही संवेदनाओं को देखना अधिक पसंद किया है । यादवजी के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में उनका समग्र कथासाहित्य भी उनके सीधे-साधे और सच्चे व्यक्ति को प्रतिबिम्बित करनेवाला है । इसी कारण यादव जी अपने प्रारंभिक लेखन काल से लेकर आज तक बराबर सम्मानीत एवं लोकप्रिय रहे ।